सादर प्रकाशनार्थ, संत समागम में

शरीर नश्वर है, जो एक दिन साथ छोड़ देता है..... ब्रह्माकुमारी पुष्पा

गेवरा बस्तीः दिनांकः27.12.2016– कबीर धर्म नगर गेवरा में आयोजित संत समागम समारोह में ब्रह्माकुमारी पुष्पा बहन ने अपने प्रवचन में कहा कि यह शरीर जड़ है व नश्वर है, जो एक दिन साथ छोड़ देता है। शरीर की तुलना एक मोटर से की गई है और आत्मा एक चैतन्य शक्ति, अविनाशी चमकता सितारा है। शास्त्रों में लिखा है कि भृकूटि के बीच चमकता है, एक अजब सितारा। जोकि 84 जन्मों के चक्कर में आता है। आत्मा संस्कारों के अनुसार जन्म लेती है। कर्मों के गति के अनुसार एक बच्चा सोने की चम्मच से दूध पीता है तो फिर दूसरा दर–दर के ठोकर खाता हैं। एक व्यक्ति बादशाह है, तो दूसरा झ्ठे बर्तन में पड़े भोजन को स्वीकार करता है। अंधा लूला लंगड़ा होना भी उसके कर्मों का फल है। श्रीमद् भागवद् गीता के अनुसार आत्मा को न आग जला सकती है, न तलवार काट सकती है। न ही पानी डुबो सकता है और न ही हवा उड़ा सकती है। आत्मा पर कर्मों का प्रभाव पड़ता है। आत्मा ही सतोप्रधान से तमोप्रधान बनती है। सतयुग में आत्मा सोने के समान कंचन है तो मानव देव कहलाता है। देवतायें आत्म अभिमानी होते हैं और उनके निर्विकारी जन्म का भी गायन है। आज भी हम उनके जड़ चित्रों का गायन और पूजन करते हैं। जहॉं पवित्रता है, वहॉं सुख और शांति स्वतः ही आ जाती है। कहते हैं कि भारत सोने की चिड़िया थी, सोने चांदी के महल थे, पुष्पक विमान थे, अर्थात् सम्पूर्ण सुख–शांति और सम्पन्नता का साम्राज्य था। धीरे धीरे आत्मा जैसे–जैसे पुनर्जन्मों की सीढ़ी उतरती जाती है, तो देह अभिमान आने के कारण पांच विकारों का आवरण चढ़ता जाता है और उसकी शक्तियां क्षीण होती जाती है। गिरते–गिरते कलिकाल में आत्मा कलियुग में तमोप्रधान लोहे के समान बन जाती है और बुरे कर्म करने के कारण दानव के समान बन जाती है। जैसे आत्मा एक ज्योति के समान है वैसे ही परमात्मा भी एक चतन्य दिव्य सितारा है, जिसे परम ज्योति शिव कहते हैं। जिसकी यादगार में भारत में द्वादस ज्योर्तिलिंगम् स्थापित हैं। जिसे हम ईश्वर, अल्लाह, गॉड, येहोवा व एक ओंकार निराकार के नाम से संबोधित करते हैं। पाप कटेश्वर एक शिव का ही नाम है। परमात्मा कहते हैं, हे आत्मन स्वयं को आत्मा समझ एक परमात्मा को याद करने से ही जन्म जन्मांतर के पाप भस्म हो जाते हैं। यह सृष्टि एक रंग मंच है, जिसमें सभी को अविनाशी पार्ट मिला हुआ है। आत्मा और परमात्मा का मूल निवास परमधाम है। परमात्मा का अवतरण धर्म ग्लानि के समय कलियुग के अंत में होता है। इसी की यादगार में शिव रात्रि का पर्व मनाया जाता है। परम पूज्य महंत मिट्ठूदास साहेब तथा परम पूज्य वियोगी परमेश्वर साहेब ने सभी संतो तथा अतिथियों का सहृदय सम्मान सहित संत समागम में स्वागत किया।

मानवता की सेवा में, ब्रह्माकुमारी रूकमणी